महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
जनसंपर्क कार्यालय
PUBLIC RELATIONS OFFICE

महात्मा गांधी के विचारों को आगे बढ़ा रहा है हिंदी विश्वविद्यालय : केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान

हिंदी विश्वविद्यालय ने धूमधाम से मनाया 29वाँ स्थापना दिवस

वर्धा, 08 जनवरी 2026 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के 29वें स्थापना दिवस के अवसर पर केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री धर्मेंद्र प्रधान ने ऑनलाइन माध्यम से अपने सारस्वत संदेश में कहा कि हिंदी भाषा में ज्ञान के सृजन और प्रकाशन का विचार महात्मा गांधी के चिंतन

और वचनों के माध्यम से देश को दिशा देता रहा है। इसी विचार परंपरा को आगे बढ़ाते हुए महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय अपने उद्देश्यों को साकार कर रहा है। विश्वविद्यालय अपने विशिष्टीकृत पाठ्यक्रमों से हिंदी को ज्ञान की समृद्ध भाषा बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा। केंद्रीय शिक्षा मंत्री श्री प्रधान गुरुवार, 8 जनवरी को वाचस्पति भवन प्रांगण में आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', सारस्वत अतिथि के रूप में कार्यपरिषद के सदस्य एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान के आगरा के उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे एवं कुलसचिव क़ादर नवाज़ ख़ान मंचासीन थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने की।

केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रधान ने आगे कहा कि वर्तमान समय की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय हिंदी को एक प्रभावी तकनीकी और ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में विकसित करने की दिशा में सराहनीय प्रयास कर रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय से आग्रह किया कि हिंदी के साथ-साथ अन्य भारतीय और विदेशी भाषाओं में भी इस प्रकार के प्रयास किए जाएँ, ताकि देश के अन्य विश्वविद्यालयों को

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत
ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org**
दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

भी प्रेरणा मिल सके। उन्होंने कहा कि ज्ञान, संस्कृति और नवाचार के माध्यम से 'विकसित भारत' की यात्रा को सशक्त बनाने में विश्वविद्यालय की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने ऑनलाइन माध्यम से अपने सारस्वत संदेश में कहा कि स्वदेशी, स्वावलंबन के साथ हमें भाषा को भी समृद्ध करना चाहिए। पिछले 29 वर्षों में विश्वविद्यालय ने हिंदी भाषा और साहित्य के विकास में जो

योगदान दिया है, वह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने 1975 में नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का जिक्र करते हुए नागपुर और वर्धा की भूमि को हिंदी के लिए महत्वपूर्ण बताया। उन्होंने हिंदी को विश्व स्तर पर और अधिक प्रतिष्ठा दिलाने का संकल्प लेने की अपील भी की।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व केंद्रीय शिक्षा मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम सभी विश्वविद्यालय की 29 वर्षों की गौरवशाली यात्रा का उत्सव मनाने के लिए एकत्र हुए हैं। यह केवल एक संस्था का नहीं, बल्कि हिंदी भाषा, भारतीय ज्ञान परंपरा और गांधी के विचारों की यात्रा का उत्सव है। विश्वविद्यालय ज्ञान और शांति का केंद्र है जो मानव उन्नति के लिए अत्यंत आवश्यक है। ज्ञान की धारा प्रत्येक व्यक्ति में प्रवाहित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें देश को आत्मनिर्भर और विकसित बनाना है। आने वाले समय में हिंदी डिजिटल दुनिया में भी एक प्रमुख माध्यम बनेगी। हिंदी में बोलना, सोचना और सृजन करना राष्ट्रभक्ति और राष्ट्रनिर्माण का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि वर्धा की भूमि स्वराज और स्वावलंबन की भूमि है।

अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा ने सभी को स्थापना दिवस की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि वर्ष 1997 में विश्वविद्यालय की औपचारिक स्थापना हुई और वर्ष 2002 में शैक्षणिक गतिविधियाँ प्रारंभ हुईं। प्रारंभ में मात्र 36 विद्यार्थियों से शुरू हुआ यह विश्वविद्यालय आज आठ विद्यापीठों के साथ 27 विभागों के माध्यम से संचालित हो रहा है और लगभग एक हजार से अधिक विद्यार्थी यहाँ अध्ययनरत हैं। विश्वविद्यालय का केंद्रीय पुस्तकालय, अकादमिक संरचना और डिजिटल पहल इसकी विशिष्ट पहचान हैं। प्रो. शर्मा ने कहा कि कोई भी विश्वविद्यालय शिक्षक, विद्यार्थी और अधिकारियों के सामूहिक प्रयास से ही ऊँचाइयों को छू सकता है। उन्होंने विश्वविद्यालय की ओर से भारतीय परंपरागत ज्ञान पर विश्वकोष बनाने का संकल्प व्यक्त किया। कुलपति ने डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' का स्वागत विश्वविद्यालय का प्रतीक चिन्ह, पुष्पगुच्छ एवं सूतमाला से किया।

प्रो. सुरेन्द्र दुबे ने अपने संबोधन में कालिदास, महात्मा गांधी और विनोबा भावे का स्मरण करते हुए कहा कि इनके विचारों को समेटते हुए विश्वविद्यालय की नींव पड़ी थी। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति का जिक्र करते हुए कहा कि इस नीति में साहित्य, कला और शिल्प से जुड़े पाठ्यक्रमों को संचालित करने की योजना है।

वरिष्ठ पत्रकार अनंत विजय ने ऑनलाइन संबोधित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय को सामाजिक बदलाव का उत्प्रेरक बनने की आवश्यकता है और इस दिशा में विगत वर्षों में विश्वविद्यालय के प्रयासों के लिए उन्होंने सभी को बधाई दी। कार्यक्रम के दौरान विश्वविद्यालय के कैलेंडर का लोकार्पण, जनसंचार विभाग द्वारा निर्मित 'मीडिया समय' का प्रकाशन एवं 'वर्धा दर्शन' का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं कुलगीत से तथा समापन राष्ट्रगान से किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रदर्शनकारी कला विभाग के अध्यक्ष प्रो. ओमप्रकाश भारती ने किया तथा कुलसचिव क़ादर नवाज खान ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर वर्धा के गणमान्य नागरिक, विश्वविद्यालय के शिक्षक,अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

ध्वजारोहण के साथ हुआ स्थापना दिवस का शुभारंभ

स्थापना दिवस का शुभारंभ प्रथमा भवन प्रांगण में कुलपति प्रो. कुमुद शर्मा द्वारा विश्वविद्यालय का ध्वज फहराकर किया गया। इस दौरान शहनाई का मंगल वादन एवं कुलगीत का गायन किया गया। कार्यक्रम में शिक्षक,अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थियों की उपस्थिति थी।

ज्ञान शांति मैत्री

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

जनसंपर्क कार्यालय

PUBLIC RELATIONS OFFICE

आज़ादी का अमृत महोत्सव

गांधी विचाराचे वाहक आहे हिंदी विश्वविद्यालय : केंद्रीय शिक्षण मंत्री धर्मेंद्र प्रधान

हिंदी विश्वविद्यालयाचा २९ वा स्थापना दिवस उत्साहात साजरा

वर्धा, ०८ जानेवारी २०२६ : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालयाच्या २९ व्या स्थापना दिनानिमित्त केंद्रीय शिक्षण मंत्री धर्मेंद्र प्रधान ऑनलाइन माध्यमातून दिलेल्या आपल्या सारस्वत संदेशात म्हणाले की हिंदी भाषेत ज्ञाननिर्मिती व प्रकाशनाची संकल्पना महात्मा गांधी यांच्या विचारांमधून देशाला दिशा देत आली आहे. हीच विचारपरंपरा पुढे नेत महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय आपल्या उद्दिष्टांची पूर्तता करत आहे. आपल्या वैशिष्ट्यपूर्ण अभ्यासक्रमांद्वारे हिंदीला समृद्ध ज्ञानभाषा बनवण्यातविश्वविद्यालय महत्त्वाची भूमिका बजावत आहे. गुरुवार, ८ जानेवारी रोजी वाचस्पती भवनाच्या प्रांगणात आयोजित स्थापना दिवस कार्यक्रमात ते संबोधित करत होते.

या कार्यक्रमाला प्रमुख अतिथी म्हणून माजी केंद्रीय शिक्षण मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक', सारस्वत अतिथी म्हणून कार्यपरिषद सदस्य व केंद्रीय हिंदी संस्थान, आग्रा येथील उपाध्यक्ष प्रो. सुरेन्द्र दुबे तसेच कुलसचिव क़ादर नवाज़ खान उपस्थित होते. कार्यक्रमाच्या अध्यक्षस्थानी कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा होत्या.

केंद्रीय शिक्षण मंत्री प्रधान पुढे म्हणाले की सध्याच्या काळाच्या गरजा लक्षात घेऊन विश्वविद्यालय हिंदीला प्रभावी तांत्रिक तसेच ज्ञान-विज्ञानाची भाषा म्हणून विकसित करण्यासाठी प्रशंसनीय प्रयत्न करत आहे. हिंदीबरोबरच इतर भारतीय व परदेशी भाषांमध्येही असे उपक्रम राबवावेत, जेणेकरून देशातील इतर विश्वविद्यालयांनाही प्रेरणा मिळेल असे आवाहन त्यांनी केले. 'विकसित भारत'च्या प्रवासाला ज्ञान, संस्कृती आणि नवोन्मेषाच्या माध्यमातून बळकटी देण्यात विश्वविद्यालयाची भूमिका अत्यंत महत्त्वाची असल्याचे त्यांनी नमूद केले.

केंद्रीय रस्ते वाहतूक व महामार्ग मंत्री नितीन गडकरी ऑनलाइन संदेशात म्हणाले की स्वदेशी व स्वावलंबनाबरोबरच आपल्याला भाषाही समृद्ध करणे आवश्यक आहे. गेल्या २९ वर्षांत विश्वविद्यालयाने हिंदी भाषा व साहित्याच्या विकासासाठी दिलेले योगदान राष्ट्रीय व आंतरराष्ट्रीय स्तरावर महत्त्वाचे आहे. १९७५ साली नागपूर येथे झालेल्या पहिल्या विश्व हिंदी संमेलनाचा उल्लेख करत त्यांनी नागपूर व वर्ध्याची भूमी हिंदीसाठी महत्त्वाची असल्याचे सांगितले. हिंदीला जागतिक स्तरावर अधिक प्रतिष्ठा मिळवून देण्याचा संकल्प घेण्याचे आवाहन त्यांनी केले.

कार्यक्रमाचे प्रमुख अतिथी माजी केंद्रीय शिक्षण मंत्री डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' आपल्या भाषणात म्हणाले की, आज आपण विश्वविद्यालयाच्या २९ वर्षांच्या गौरवशाली प्रवासाचा उत्सव साजरा करण्यासाठी एकत्र आलो आहोत. हा उत्सव केवळ एका संस्थेचा नसून, हिंदी भाषा, भारतीय ज्ञानपरंपरा आणि गांधीजींच्या विचारांच्या प्रवासाचा आहे. विश्वविद्यालय हे ज्ञान व शांततेचे केंद्र असून मानवी प्रगतीसाठी अत्यंत आवश्यक आहे. ज्ञानाची धारा प्रत्येक व्यक्तीपर्यंत पोहोचली पाहिजे. देशाला आत्मनिर्भर व विकसित बनवण्याचे उद्दिष्ट असल्याचे त्यांनी सांगितले. येणाऱ्या काळात हिंदी डिजिटल विश्वातही एक प्रमुख माध्यम बनेल. हिंदीत बोलणे, विचार करणे आणि सर्जन करणे हे राष्ट्रभक्ती व राष्ट्रनिर्मितीचे प्रभावी साधन आहे. वर्ध्याची भूमी ही स्वराज्य व स्वावलंबनाची भूमीहोय असेहि ते म्हणाले.

अध्यक्षीय भाषणात कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा यांनी सर्वांना स्थापना दिनाच्या शुभेच्छा दिल्या. त्या म्हणाल्या विश्वविद्यालयाची औपचारिक स्थापना १९९७ मध्ये झाली आणि २००२ मध्ये शैक्षणिक उपक्रम सुरू झाले. सुरुवातीला केवळ ३६ विद्यार्थ्यांपासून सुरू झालेल्या या विश्वविद्यालयात आज आठ विद्यापीठे, २७ विभाग असून सुमारे एक हजाराहून अधिक विद्यार्थी शिक्षण घेत आहेत. केंद्रीय ग्रंथालय, शैक्षणिक रचना आणि डिजिटल उपक्रम ही विश्वविद्यालयाची वैशिष्ट्यपूर्ण ओळख आहे. शिक्षक, विद्यार्थी व अधिकारी यांच्या सामूहिक प्रयत्नांतूनच कोणतेही विश्वविद्यालय प्रगती करू शकते, असे त्यांनी सांगितले. भारतीय पारंपरिक ज्ञानावर आधारित विश्वकोश निर्माण करण्याचा संकल्पही त्यांनी व्यक्त केला. यावेळी कुलगुरूंनी डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' यांचे विश्वविद्यालयाचे प्रतीकचिन्ह, पुष्पगुच्छ व सूतमाळ देवून स्वागत केले.

प्रो. सुरेन्द्र दुबे यांनी आपल्या भाषणात कालिदास, महात्मा गांधी आणि विनोबा भावे यांचे स्मरण केले व त्यांच्या विचारांवरच विश्वविद्यालयाची पायाभरणी झाली आहे असे प्रतिपादन केले. राष्ट्रीय शिक्षण धोरणाचा उल्लेख करत त्यांनी साहित्य, कला व शिल्पाशी संबंधित अभ्यासक्रम सुरू करण्याची योजना या धोरणात असल्याचे त्यांनी सांगितले.

पोस्ट हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र), भारत

ई-मेल/E-mail: pro.mgahv@hindivishwa.ac.in **वेबसाइट/Website: www.hindivishwa.org**

दूरभाष :+91-7152-252651 मोबाइल/Mobile : 9960562305

ज्येष्ठ पत्रकार अनंत विजय यांनी ऑनलाइन संबोधनात विश्वविद्यालयाने सामाजिक परिवर्तनाचे प्रेरक बनण्याची गरज असल्याचे सांगितले आणि या दिशेने मागील काही वर्षांत झालेल्या प्रयत्नांबद्दल सर्वांचे अभिनंदन केले.

कार्यक्रमादरम्यान विश्वविद्यालयाच्या दिनदर्शिकेचे लोकार्पण, जनसंचार विभागाच्या 'मीडिया समय'चे प्रकाशन तसेच 'वर्धा दर्शन'चे सादरीकरण करण्यात आले. दीपप्रज्ज्वलन व कुलगीताने कार्यक्रमाची सुरुवात झाली तर राष्ट्रगीताने समारोप झाला. कार्यक्रमाचे संचालन प्रदर्शनकारी कला विभागाचे अध्यक्ष प्रो. ओमप्रकाश भारती यांनी केले तर कुलसचिव क़ादर नवाज़ खान यांनी आभार मानले. यावेळी गणमान्य नागरिक, विश्वविद्यालयातील शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी व विद्यार्थी मोठ्या संख्येने उपस्थित होते.

ध्वजारोहणाने स्थापना दिवसाची सुरुवात

स्थापना दिवसाची सुरुवात प्रथमा भवन प्रांगणात कुलगुरू प्रो. कुमुद शर्मा यांच्या हस्ते विश्वविद्यालयाचा ध्वज फडकावून करण्यात आली. यावेळी शहनाईचे मंगल वादन व कुलगीताचे गायन करण्यात आले. कार्यक्रमाला शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित होते.

Hindi University is Carrying Forward Mahatma Gandhi's Ideals: Union Education Minister Dharmendra Pradhan

Hindi University Celebrates Its 29th Foundation Day with Grandeur

Wardha, January 8, 2026: On the occasion of the 29th Foundation Day of Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Union Education Minister Shri Dharmendra Pradhan, in his online Saraswat message, said that the idea of knowledge creation and publication in the Hindi language has guided the nation through the thoughts and words of Mahatma Gandhi. Carrying forward this very tradition of thought, Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya is fulfilling its objectives. Through its specialized academic programmes, the university is playing an important role in enriching Hindi as a language of knowledge.

Shri Pradhan was addressing the Foundation Day held on Thursday, January 8, at the Vachaspati Bhavan premises. On this occasion, former Union Education Minister Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' was present as the Chief Guest, while Prof. Surendra Dubey, Member of the Executive Council and Deputy Director of the Central Hindi Institute, Agra, was present as the Saraswat Guest. The Registrar Kadar Nawaz Khan, was also present on the dais. The programme was presided over by Vice-Chancellor Prof. Kumud Sharma.

The Union Education Minister further said that keeping in mind the present-day requirements, the university is making commendable efforts to develop Hindi as an effective language of technology and science. He urged the university to undertake similar initiatives not only in Hindi but also in other Indian and foreign languages, so that other universities across the country may draw inspiration from these efforts. He emphasized that the role of universities is extremely significant in strengthening the journey towards a "Developed India" through knowledge, culture, and innovation.

Union Minister for Road Transport and Highways Shri Nitin Gadkari, in his online Saraswat message, said that along with swadeshi and self-reliance, it is essential to enrich our languages as well. Over the past 29 years, the contribution of the university towards the development of Hindi language and literature has been highly significant at both national and international levels. Recalling the first World Hindi Conference held in Nagpur in 1975, he described the land of Nagpur and Wardha as highly important for Hindi. He also appealed to everyone to take a resolve to further enhance the global stature of the Hindi language.

Chief Guest and former Union Education Minister Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank', in his address, said that everyone had gathered to celebrate the university's glorious journey of 29 years. This celebration is not merely of an institution, but of the Hindi language, the Indian knowledge tradition, and the ideas of Mahatma Gandhi. The university is a center of knowledge and peace, both of which are essential for human progress. The flow of knowledge should reach every individual. He added that India must be made self-reliant and developed. In the

coming times, Hindi will emerge as a major medium in the digital world as well. Speaking, thinking, and creating in Hindi are powerful means of patriotism and nation-building. He also said that the land of Wardha symbolizes Swaraj and self-reliance.

In her presidential address, Vice-Chancellor Prof. Kumud Sharma extended Foundation Day greetings to all and said that the university was formally established in 1997, while academic activities began in 2002. Starting with only 36 students, the university today operates through eight schools and 27 departments, with more than one thousand students currently enrolled. The university's central library, academic structure, and digital initiatives are among its distinctive features. Prof. Sharma said that any university can reach great heights only through the collective efforts of teachers, students, and administrative staff. She expressed the university's resolve to create a global knowledge repository based on India's traditional knowledge systems. The Vice-Chancellor welcomed Dr. Ramesh Pokhriyal 'Nishank' by presenting the university's emblem, a bouquet of flowers, and a stole.

Prof. Surendra Dubey, in his address, recalled Kalidasa, Mahatma Gandhi, and Vinoba Bhave, stating that the foundation of the university was laid by assimilating their ideas. Referring to the National Education Policy, he said that it envisages the introduction of courses related to literature, arts, and crafts.

Senior journalist Anant Vijay, addressing the gathering online, said that the university needs to become a catalyst for social change and congratulated everyone for the university's efforts in this direction over the past years.

During the programme, the university calendar was released, the publication *'Media Samay'* produced by the Department of Journalism and Mass Communication was unveiled, and *'Wardha Darshan'* was showcased. The programme began with the lighting of the ceremonial lamp and the rendition of the university anthem and concluded with the National Anthem. The event was conducted by Prof. Omprakash Bharti, Head of the Department of Performing Arts, and the vote of thanks was presented by Registrar Kadar Nawaz Khan. A large number of teachers, officers, staff members, research scholars, and students were present on the occasion.

Foundation Day Begins with Flag Hoisting

The Foundation Day celebrations commenced with the hoisting of the university flag by Vice-Chancellor Prof. Kumud Sharma at the Prathama Bhavan premises. The occasion was marked by the auspicious sound of the shehnai and the singing of the university anthem. Teachers, officers, staff members, research scholars, and students were present in large numbers during the ceremony.